International Journal in Management and Social Science
Volume 7 Issue 5, May 2019 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 6.178
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

राव गोपाल सिंह खरवा का राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

पवन भंवरिया
सहायक आचार्य (इतिहास)
राजकीय कला महाविद्यालय, सुजानगढ़

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में भारत के विभिन्न अंचल अपने विशिष्ट योगदान के कारण महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इसी महत्वपूर्ण स्थान में राजपूताना अर्थात् राजस्थान का नाम भी गर्व से लिया जाता है। राजस्थान विविध रियासतों और सामंती संरचनाओं में विभाजित था और अप्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश शासन के अंतर्गत था। परिणामस्वरूप, यहाँ का राजनीतिक संघर्ष दोहरे स्वरूप का वाहक था – पहला, ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता का अप्रत्यक्ष नियंत्रण और दूसरी ओर देशी रियासतों की दमनकारी नीतियाँ। इस जटिल सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य में इस शौर्य धरा ने अनेक स्थानीय नेताओं ने स्वतंत्रता चेतना को प्राणवान बनाने और लोकतांत्रिक मूल्यों के संवर्धन में अद्वितीय योगदान दिया जैसे सागरमल गोपा, ठाकुर देशराज, स्वामी गोपालदास, कुम्भाराम आर्य, कुँवर मदनसिंह, अर्जुनलाल सेठी, मोतीलाल तेजावत, गोकुलाल असावा, भोगीलाल पण्ड्या आदि और इन्हीं स्वतन्त्रता प्रेमी नेताओं में राव गोपाल सिंह खरवा का नाम भी विशेष रूप से लिया जाता है।

राव गोपाल सिंह खरवा न केवल राजस्थान के राष्ट्रवादी आंदोलनों के अग्रणी कार्यकर्ता थे अतपु वे उन बिरले रियासती नेताओं में से थे जिन्होंने व्यक्तिगत विशेषाधिकारों से ऊपर उठकर राजस्थान की जनता के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उनके व्यक्तित्व में राजनैतिक प्रतिबद्धता, नैतिक साहस और राष्ट्रीय आदर्शों के प्रति समर्पण का अद्वितीय समन्वय दिखाई देता है। राजस्थान में उन्होंने किसान जागरण, प्रजामंडल आंदोलन, सामाजिक सुधारों तथा रियासती शासन के शोषण के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध की परंपरा को सुदृढ़ किया।

19 अक्टूबर, 1873 ई. (कार्त्तिक कृष्णा एकादशी, गुरुवार) को जन्मे इस माटी के लाल के माता–पिता का नाम गुलाब कंवर चूण्डावत एवं राव माधोसिंह था।[1] जो बालक बचपन में ही घुड़सवारी और बन्दूक

[1] नाटाणी, प्रकाशनारायण, राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा : राव गोपाल सिंह खरवा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2001, पृ. 1

चलाने में निपुण हो जाए तो निश्चय ही वह निडर एवं गुणवान होगा। यह सभी गुण राव गोपालसिंह खरवा में विद्यमान थे। उनके अक्षर ज्ञान का आरम्भ पण्डित शिवलाल तिवाड़ी द्वारा किया गया। राव गोपालसिंह की आरम्भिक शिक्षा अजमेर में हुई और वे वहां छह वर्ष तक अध्ययनरत रहे। जब वे 19 वर्ष के थे (1891 ई. में) तब उनकी माता का निधन हो गया और वे अपना अध्ययन छोड़ खरवा लौट आए।[2] इसके पश्चात् वे मण्डावा के ठाकुर अजीतसिंह के पास जयपुर चले गए। जयपुर में चार माह रहने के पश्चात् वे अजमेर में बड़ली के ठाकुर की हवेली में रहने लगे।[3] अजमेर में एक वर्ष के निवास के बाद वे मेवाड़ और वहां से जोधपुर चले गए। वहां वे जोधपुर के महाराज जसवंतसिंह के पास दो वर्ष रहे। लेकिन वि.सं. 1952 (1895 ई.) में पुनः खरवा लौट आए। वि.स. 1955 (1898 ई.) कार्तिक कृ ष्णा नवमी (16 अक्टूबर 1898 ई.) को उनके पिता राव माधोसिंह के निधन के बाद राव गोपालसिंह खरवा के विधिवत शासक बने।[4]

उनके शासक बनने के अगले वर्ष ही राजस्थान में भीषण अकाल (छप्पनियां अकाल) पड़ा। अकाल की विषम परिस्थितियों का सामना करने तथा अपनी प्रजा को भुखों मरने से बचाने के लिए राव गोपालसिंह खरवा ने अद्वितीय मानवीय संवेदनशीलता का परिचय दिया। उन्होंने अपनी छोटी–सी जागीर के सीमित संसाधनों के बावजूद राज्य के कोष को जनता के लिए पूर्णतः खोल दिया। आपातकालीन स्थिति में उन्होंने विभिन्न स्थानों पर भोजनालय स्थापित करवाए, जहाँ बाजरे का खीचड़ा बनवाकर भूखे व्यक्तियों को निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जाता था। साथ ही भूने हुए चने भी दिए जाते थे।[5] चूँकि उनकी जागीर की आय अत्यंत सीमित थी, इसलिए व्यापक अकाल से प्रजा को बचाने हेतु राव गोपालसिंह

---

2 शर्मा, देवदत्त, तारादत्त निर्विरोध, मनोहर प्रभाकर, देश के दीवाने : राजस्थान के स्वतन्त्रता सेनानियों की कीर्ति कथाएं, सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशालय, जयपुर, 1987, पृ. 25

3 नाटाणी, प्रकाश नारायण, पूर्वोक्त, पृ. 2

4 शेखावत, सुरजनसिंह एवं भवानी सिंह राठौड़, खरवा का वृहद् इतिहास, प्रकाशन राव चन्द्रसेन, 1998, पृ. 103

5 वही, पृ. 107

को अपने अनेक ग्राम गिरवी रखने पड़े तथा अजमेर और ब्यावर के सेठों से कर्ज लेना पड़ा।[6] इस मानवीय प्रयास ने उनके व्यक्तित्व को प्रजा में अत्यंत लोकप्रिय बना दिया। राव गोपालसिंह के परोपकारी चरित्र और लोक–सेवा की भावना को समकालीन लोककाव्य में भी सराहा गया है, जैसा कि इन पंक्तियों में स्पष्ट होता है –

भय खायो भूपति किता, दुर्भख छपनों देख।

पाली प्रजा गोपालसीं, परम धरम चहुँ पेख।।

राणी जाया राजवी, जुड़े न दूजा जोड़।

छपन साल द्रव छोलदी, रंग गोप राठौड़।।[7]

राव गोपालसिंह खरवा की निर्भीकता, न्यायप्रियता, परोपकारिता एवं संरक्षण भावना के कारण ही उनके बारे में कहा जाता है कि –

6 वही

7 शेखावत, सुरजनसिंह एवं भवानी सिंह राठौड़, खरवा का वृहद् इतिहास, प्रकाशन राव चन्द्रसेन, 1998, पृ. 101

डारण भुज डंडांह, रजवट वट गोपाल रै।

खरवो नव खंडांह, कमधज तूं चावो कियो।।[8]

राव गोपालसिंह के अदम्य साहस और निर्भीक स्वभाव से प्रभावित होकर केसरी सिंह बारहठ ने महाराणा फतेहसिंह को दिल्ली दरबार जाने से विरत करने हेतु रचित तेरह सोरठों की एक पुस्तिका उन्हें सौंपी, ताकि वह इसे सुरक्षित रूप से महाराणा फतेहसिंह तक पहुँचा सकें। नसीराबाद रेलवे स्टेशन से पहले राव गोपालसिंह ने केसरी सिंह बारहठ द्वारा रचित चेतावनी रा चूंगट्या महाराणा को प्रस्तुत की। जिसे पढ़कर महाराणा फतेहसिंह दिल्ली जाने के उपरान्त भी दिल्ली दरबार में उपस्थित नहीं हुए। इस प्रकार दिल्ली जाते समय सरेरी स्टेशन पर महाराणा को चेतावनी रा चूंगट्या पहुचाने एवं इससे सम्बन्धित अन्य कार्यो। में राव गोपालसिंह की महत्पूर्ण भूमिका रही। महाराणा के दिल्ली से वापस लौटते समय नसीराबाद रेलवे स्टेशन पर राव गोपालसिंह ने फतेहसिंह धन्यवाद देते हुए दो सोरठे कहे[9] –

होता हिन्दू हतास, नमातो जो राणा नृपत

सबल फता साबास, आरज जल राखी अजां।।

हिंगलाज दान कविया ने अपनी पुस्तक राजस्थान स्वतन्त्रता संग्राम काव्य प्रतिनिध रचनाएं में गोपालसिंह खरवा के लिए एक सोरठा कहा है –

भारत धर भोपाल, सिंह ब्रिटिस हिरण हुवा।

गिड़ एकळ गोपाळ, कमधजियो भेवो करै।।

[8] कविया, हिंगलाजदान, राजस्थान स्वतन्त्रता संग्राम काव्य प्रतिनिध रचनाएं, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर में उल्लेखित एक सोरठा

[9] नाटाणी, प्रकाश नारायण, पूर्वोक्त, पृ. 11

गोपालसिंह खरवा के समय आर्य समाज अपना कार्य कर रहा था और उन पर इसका पूर्ण प्रभाव रहा। आर्य समाज की सुधारवादी और देशप्रेम से सम्बन्धित विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। जब वे खरवा के शासक बने तो अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों से वे भलीभांति परिचित होने लगे और ब्रिटिश हुकूमत के विरोधी बन गए।

उस समय राजस्थान में शिक्षण–सुविधाएँ अत्यंत सीमित थीं और आम जनता में शिक्षा के प्रति जागरूकता का स्पष्ट अभाव दिखाई देता था। ऐसे परिवेश में राव गोपालसिंह ने शिक्षा के महत्त्व को दूरदृष्टि से पहचानते हुए उल्लेखनीय पहलें कीं। उन्होंने अध्ययन की इच्छा रखने वाले अनेक विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान कीं तथा उन्हें आर्य समाज के छात्रावासों में प्रवेश दिलाया। इसके साथ ही, उन्होंने अजमेर और मारवाड़ के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार को बढ़ावा देने हेतु विशेष प्रचारक एवं उपदेशक भेजे, जो लोगों को अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित करते थे। उनकी इस शैक्षिक प्रतिबद्धता की व्यापक सराहना हुई, और कई गाँवों के जागीरदारों ने उनके प्रयासों के प्रति कृ तज्ञता प्रकट करते हुए धन्यवाद–पत्र भी भेजे।

राव गोपालसिंह खरवा ऐसे व्यक्ति थे जो ब्रिटिश सत्ता को क्रान्तिकारी कार्यों से उखाड़ फेंकने के कार्य में प्रवृत्त हो चुके थे। प्रथम विश्व युद्ध को उपयुक्त अवसर जानकर उन्होंने देश के दूसरे क्रान्तिकारी नेताओं के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरूद्ध क्रान्ति का बिगुल बजा दिया। 1915 ई. के स्वतन्त्रता विद्रोह के समय अजमेर–मेरवाड़ा में जन विद्रोह का संचालन करने तथा प्रान्त को अंग्रेजों से मुक्ति दिलाने के कार्य में राव गोपालसिंह खरवा अग्रणी नेताओं में थे।

राव गोपालसिंह खरवा के अभिन्न मित्रों में दामोदरदास राठी एवं अर्जुनलाल सेठी थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा भी उनके सम्पर्क में थे और उन्होंने ने ही गोपालसिंह को अरविंद घोष से 1906 ई. में मिलाया था। इनके प्रमुख सहयोगी क्रान्तिकारियों में पं. विष्णुदत्त त्रिपाठी, समर्थदान चारण, सोमदत्त लहरी, भूपसिंह आदि थे।[10]

[10] नाटाणी, प्रकाश नारायण, राजस्थान निर्माण के पचास वर्ष, पोईन्टर पब्लिकेशन, जयपुर, 1999, पृ. 37

राव गोपालसिंह खरवा के नेतृत्व में खरवा राष्ट्रीय भावना का ऐसा केंद्र बन गया था, जहाँ स्वतंत्रता की लहर हर दिल में जोश भर रही थी। ब्यावर के सेठ दामोदरदास राठी का यहाँ बार–बार आना स्थानीय महाजनों के भीतर भी देश के प्रति नई चेतना जगा गया। इसी प्रेरणा से 14 मई 1907 ई. को खरवा के व्यापारियों और दुकानदारों ने एक ऐतिहासिक निर्णय लिया और उन्होंने विदेशी खांड (शक्कर) की बिक्री पूरी तरह बंद कर दी। इसके साथ ही विदेशी वस्त्रों की होली जलाकर विदेशी सामान का बहिष्कार किया गया और राव गोपालसिंह के आग्रह पर स्वदेशी वस्त्र पहनने की सामूहिक प्रतिज्ञा भी ली गई।[11] इस पहल में केवल महाजन ही नहीं बल्कि गाँव के सभी वर्गों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। परिणामस्वरूप खरवा ने स्वाधीनता आंदोलन की दिशा में एक सशक्त और प्रेरक कदम प्रस्तुत किया, जिसने स्थानीय समाज में राष्ट्रीयता की भावना को और भी प्रबल कर दिया।

जब भारत धर्ममण्डल का एक प्रतिनिधि मण्डल तत्कालीन वायसराय से मिलने के लिए कलकत्ता जाने वाला था। जिसमें राव गोपालसिंह खरवा को सम्मिलित करने के लिए स्वामी ज्ञानानन्द अजमेर आए और उनसे 20 अगस्त, 1907 ई. को मिले। स्वामी ज्ञनानन्द के आग्रह पर गोपालसिंह ने प्रतिनिधि मण्डल के साथ जाने की सहमति दी।[12] 10 मार्च, 1908 को प्रतिनिधि मण्डल की भेंट वायसराय से हुई। 10 मार्च को ही विपिनचन्द्र पाल के रिहाई पर हावड़ा रेलवे स्टेशन पर विशाल जुलूस निकाला गया जिसमें राव गोपालसिंह खरवा भी सम्मिलित हुए। कलकत्ता में अरविन्द घोष ने उन्हें बंगाल के क्रान्तिकारियों से मिलवाया और कलत्ता के नेशनल कॉलेज में गोपालसिंह का भाषण हुआ। कलकत्ता में उन्हें 'राजपूताने का राठौड़ वीर' कहा गया। यहीं से वे अंग्रेज सरकार की नजर में आ गए और उनकी मुखबिरी होने लगी।[13]

11 शेखावत, सुरजनसिंह, एवं भवानी सिंह राठौड़, पूर्वोक्त, पृ. 114–115

12 वही, पृ. 120

13 नाटाणी, प्रकाशनारायण, राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा : राव गोपाल सिंह खरवा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2001, पृ. 17

सन् 1915 के जून माह में ए.जी.जी., राजपूताना के आदेशानुसार राव गोपालसिंह खरवा को टोडगढ़ के दूरस्थ पहाड़ी अंचल में नजरबंद कर दिया गया।[14] इस अवधि में उन्हें अपने व्यक्तिगत शस्त्रों तथा कुछ विश्वस्त सेवकों और सहयोगियों को साथ रखने की अनुमति प्रदान की गई थी। ठीक उसी समय लाहौर षडयंत्र प्रकरण में गिरफ्तार किए गए एक क्रांतिकारी ने अपने बयान में यह उल्लेख किया कि राव गोपालसिंह के सचिव भूपसिंह से उसका संपर्क रहा है और उसे खरवा से बंदूकें तथा कारतूस प्राप्त हुए थे।[15]

नजरबंदी के दौरान गोपालसिंह को यह सूचना मिली कि सरकार उनके शस्त्रों को जब्त कर उन्हें निर्बल बनाने का प्रयास कर रही है, जो उनके अनुसार क्षत्रिय धर्म की मूल भावना के प्रतिकूल था। उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि उनके नजरबंद होते ही खरवा के ग्रामीणों पर पुलिस द्वारा अत्याचार किए जा रहे हैं। अपने स्वाभिमान और कर्तव्य–बोध से प्रेरित होकर राव गोपालसिंह ने अपने सेवकों को घर वापस भेज दिया और 9 जुलाई 1915 को नजरबंदी की अवहेलना करते हुए टॉडगढ़ की घेराबंदी को भेदकर वहाँ से प्रस्थान कर गए।[16]

राव गोपालसिंह खरवा की प्रकट अंग्रेज–विरोधी प्रवृत्तियों से ब्रिटिश अधिकारी पहले ही असहज थे। नीमेज हत्याकांड में गिरफ्तार किए गए क्रांतिकारी सोमदत्त लहरी के बयान सामने आने के बाद ब्रिटिश प्रशासन का संदेह और प्रबल हो गया। सरकार को यह आभास हुआ कि राव साहब न केवल क्रांतिकारी गतिविधियों से सहानुभूति रखते हैं, बल्कि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उनका समर्थन भी कर रहे हैं। इसी पृष्ठभूमि में अजमेर के जिला कलेक्टर ए. टी. होमर ने 23 अक्टूबर 1914 को एक औपचारिक नोटिस जारी कर उनसे जवाब तलब किया।[17]

---

14 जैन, फूलचन्द, स्वतन्त्रता सेनानी ग्रंथमाला 7, क्रांतिकारी आन्दोलन : सुप्रसिद्ध क्रांतिवीर, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 1999, पृ. 220–221

15 वही

16 मिश्र, विवेक, आजादी : क्रांतिकारियों की शौर्यगाथा, प्रभात प्रकाशन, ई–पुस्तक, 2022, पृ. 32

17 मेहर, जहूरखां एवं सुखवीर सिंह गहलोत, राजस्थान स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, श्री जगदीशसिंह गहलोत शोध संस्थान, जोधपुर, 1992, पृ. 70

इस पत्र में कई गंभीर आपत्तियाँ उठाई गईं। पहला आरोप यह था कि वे राजपूत समुदाय को सरकार के विरुद्ध भड़काकर विद्रोह के लिए तैयार कर रहे हैं। दूसरा, यह कहा गया कि नीमेज प्रकरण का आरोपी सोमदत्त उनके आर्थिक संरक्षण में अध्ययनरत रहा है और बाद में वह हिंसक गतिविधियों में लिप्त पाया गया। तीसरा आरोप विष्णुदत्त से संबंधित था, जिसे प्रशासन अराजक विचारों वाला व्यक्ति मानता था और कोटा तथा नीमेज की घटनाओं का प्रमुख दोषी मानता था; आरोप था कि वह राव गोपालसिंह के समक्ष आता–जाता रहा और ग्रामों में उपदेशक के रूप में भेजा जाता था।

इसके अतिरिक्त, नारायणसिंह के विषय में उल्लेख किया गया कि वह भी उनके खर्च पर शिक्षित हुआ था और उस पर अराजकता का अभियोग था, यद्यपि वह गिरफ्तारी से पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। पाँचवाँ आरोप इस आधार पर था कि गाड़सिंह नामक व्यक्ति भी उन्हीं के क्षेत्र का निवासी था। अंत में, यह बिंदु भी उठाया गया कि मिस्टर आर्मस्ट्रांग की जाँच में राव साहब ने स्वयं स्वीकार किया था कि ठाकुर केसरीसिंह बारहठ उनके निकट परिचित थे और प्रायः खरवा आते रहते थे। इन सभी आरोपों के संदर्भ में राव गोपालसिंह ने संतुलित, विस्तारपूर्ण और युक्तिसंगत जवाब प्रस्तुत कर ब्रिटिश प्रशासन की शंकाओं का प्रभावी निराकरण किया।

सन 1931 में शेख अब्दुल्ला ने कश्मीर के राजनीतिक परिदृश्य में सक्रिय हस्तक्षेप का संकेत देते हुए पहली बार वहाँ की सत्ता पर अधिकार स्थापित करने की अपनी आकांक्षा को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने कश्मीर की बहुसंख्यक मुस्लिम आबादी को संगठित किया, जिसके परिणामस्वरूप वैध शासक महाराजा के विरुद्ध असंतोष एवं विद्रोह का वातावरण निर्मित होने लगा। धार्मिक उन्माद और 'जिहाद' के आह्वान के कारण उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों से अनेक मुस्लिम युवक कश्मीर की ओर आकर्षित हुए। इस उथल–पुथल के प्रत्युत्तर में भारत के अनेक हिंदू संगठनों ने भी महाराजा के समर्थन में स्वयंसेवी दलों को संगठित कर कश्मीर भेजने का निर्णय लिया।

इसी कालखंड में राष्ट्रवादी चिंतन एवं प्रखर देशभक्ति के लिए विख्यात राव गोपालसिंह खरवा ने भी एक शस्त्र–सज्जित स्वयंसेवी टुकड़ी का गठन कर कश्मीर की ओर प्रस्थान किया।[18] किंतु लाहौर

[18] नाटाणी, प्रकाशनारायण, राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा : राव गोपाल सिंह खरवा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2001, पृ. 57

पहुँचने पर पंजाब के गवर्नर ने परिस्थितियों के आकलन के आधार पर उनके कश्मीर प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया। बाद में प्रशासन द्वारा उन्हें सूचना दी गई कि विद्रोह को नियंत्रित कर लिया गया है तथा उनकी आगे बढ़त स्थानीय स्थिति को पुनः अस्थिर कर सकती है।

लाहौर प्रवास के दौरान राव गोपालसिंह का हिंदू, सिख तथा आर्य समाज से संबद्ध अनेक सामाजिक–धार्मिक संगठनों द्वारा अत्यंत उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया। इस अवधि में उन्हें "हिंदू–सिख हितकारिणी सभा" का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया तथा इसी सभा में उन्हें "राजस्थान केसरी" की प्रतिष्ठित उपाधि से सम्मानित किया गया।[19]

जीवन के अंतिम चरण में राव गोपालसिंह अनेक गंभीर शारीरिक व्याधियों, विशेषतः हृदय–रोग, पाचन–तंत्र की दुर्बलता तथा स्नायविक विकार, से अत्यंत व्यथित रहने लगे। उपचार के उद्देश्य से वे अजमेर आए, जहाँ लगभग दो माह तक अत्यधिक कष्ट सहते हुए भूमि को ही अपनी शैय्या बनाकर रोग से संघर्ष करते रहे। अंततः वैशाख संवत् 1995 की चैत्र कृष्ण सप्तमी, तदनुसार 12 मार्च 1939 को, यह विशिष्ट व्यक्तित्व अपना सांसारिक दायित्व पूर्ण कर परलोकगमन को प्राप्त हुआ।

ऐसे देशभक्त क्रान्तिकारी इतिहास में सदैव चिरस्मरणीय रहेंगे। हिंगलाजदान कविया ने उनके लिए लिखा है कि –

अनमी अर्‌यां अजेव छत्रपत रिव किण सू छिपै।

दिपै सवाई देव, गढ़ खरवै गोपाळसी।।[20]

सन्दर्भ

[19] वही, पृ. 58

[20] कविया, हिंगलाजदान, पूर्वोक्त